माँ सरस्वती स्तुति

यया विना जगत्सर्वम्, शाश्वतजीवनं मृतं भवेत्।
ज्ञानाधि देवी या तस्यै, सरस्वत्यै नमो नमः॥

जिस ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के बिना सम्पूर्ण जीवन मृत प्रायः हो जाता है उस माँ शारदे को पुनः पुनः प्रणाम।

यया विना जगत्सर्वं, मुकमुन्वत् यत् सदा।
वागाधिष्ठात्री या देवी, तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥

जिस वाणी की अधिष्ठात्री वाग्देवी के बिना सारा जगत [सम्पूर्ण जीवन] सदा के लिये मुकवत् [गूँगे की तरह] हो जाता है उस माँ वाणी को बारम्बार प्रणाम।

सरस्वती महाभागे, विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षी, विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥

हे माँ सरस्वती! हे महाभागे [ऐश्वर्य गुण-शालिनी]! हे विद्दे [यथार्थ ज्ञान को प्रदान करने वाली]! हे कमल लोचने [कमल सदृश नेत्रों वाली]! हे विश्वरूपे [समस्त संसार के स्वरूप में (ज्ञान में) भाषित होने वाली]! हे विशालाक्षी [हे सुन्दर विशाल नेत्रों वाली] मुझे भव बन्धन से मोक्ष प्रदान करने वाली विद्या प्रदान करें।

- गोवर्धन दास बिन्नानी जी, [राजा बाबू], बीकानेर (राज.)